



भूगोल (वैकल्पिक विषय)

TEST - 10th

समय : तीन घण्टे

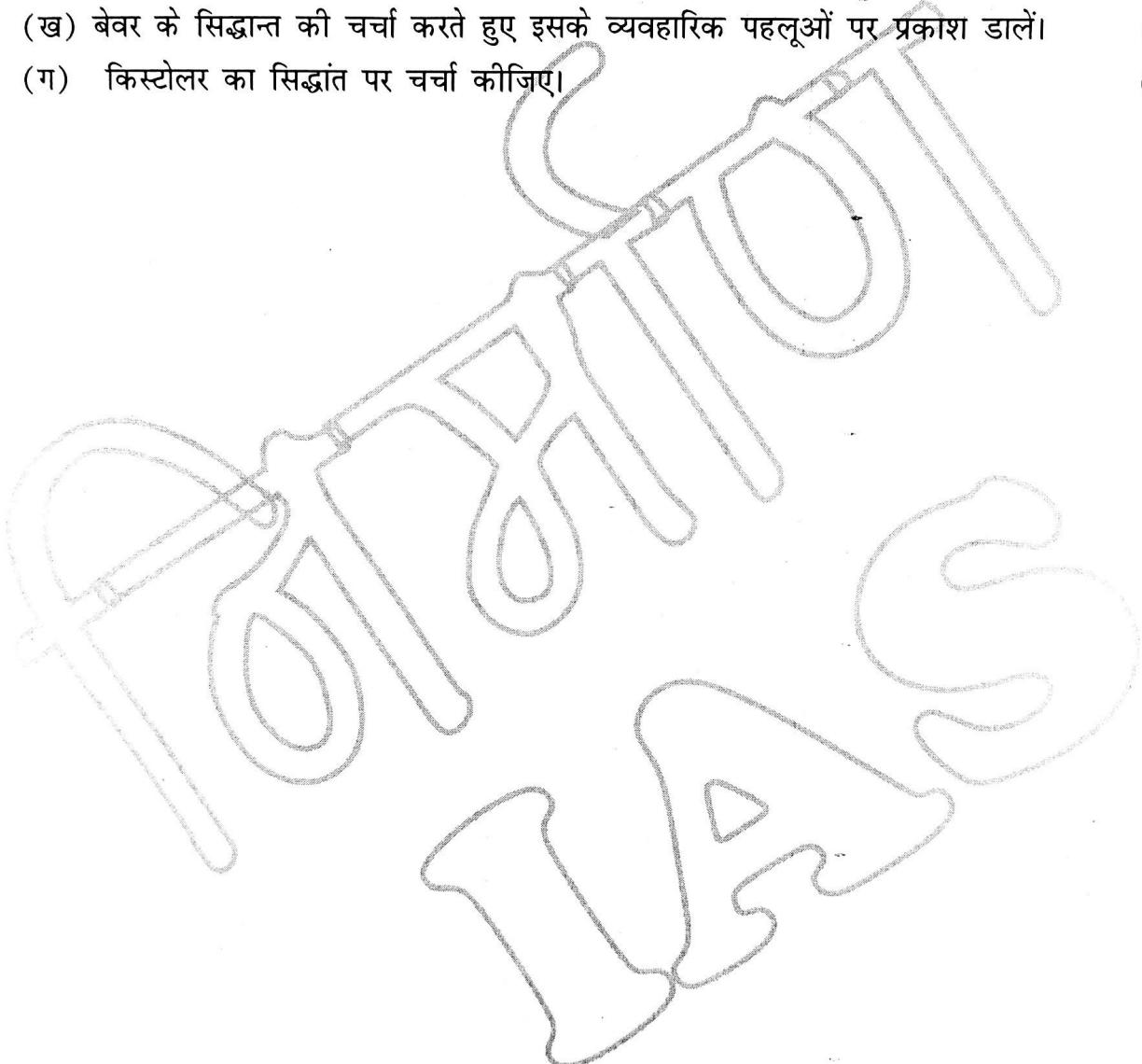
पूर्णांक : 300

प्रश्न-पत्र संबंधी विशेष अनुदेश

- दो खण्डों में कुल 8 प्रश्न दिए गए हैं।
 - उम्मीदवार को कुल 5 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
 - प्रत्येक प्रश्न / भाग के लिए नियत अंक उसके सामने दिए गए हैं।
 - प्रश्नों के उत्तर उसी प्राधिकृत माध्यम में लिखे जाने चाहिए, जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख्यपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। प्राधिकृत माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
 - प्रश्नों की शब्द सीमा, जहाँ उल्लिखित है, को माना जाना चाहिए।
 - जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तरों को समुचित चित्रों, रेखा-मानचित्रों और आरेखों की सहायता से स्पष्ट कीजिए। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिए दिए गए स्थान में ही बनाना है।
 - प्रश्नों के प्रयासों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। आंशिक रूप से दिए गए प्रश्नों के उत्तर को भी मान्यता दी जाएगी यदि उसे काटा न गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए कोई पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।
1. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिए। $12 \times 5 = 60$
- (क) 21वीं सदी में विश्व जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति।
(ख) अनुषंगी नगर की संकल्पना एवं उद्देश्य।

- (ग) नगरों के संपोषणीय विकास हेतु महत्वपूर्ण कारक।
 (घ) सामाजिक पूँजी के रूप में जनसंख्या।
 (ड.) नगरीय पदानुक्रम की संकल्पना का उपयोग।
2. निम्नलिखित में से प्रत्येक का 250 शब्दों में उत्तर दीजिए। (20)
- (क) नगरीय प्रभाव क्षेत्र की संकल्पना एवं महत्व का परीक्षण कीजिए।
 (ख) जनसंख्या प्रवसन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं जननांकीय प्रभावों का विवेचन कीजिए। (20)
- (ग) भारत में महानगरों में जनसंख्या प्रवसन के कारण हो रही वृद्धि को रोकने के लिए अपने सुझाव प्रस्तुत कीजिए। (20)
3. निम्नलिखित में से प्रत्येक का 250 शब्दों में उत्तर दीजिए।
- (क) वायुमंडलीय दशाओं की स्थिरता और अस्थिरता की व्याख्या करें। दोनों स्थितियों से उत्पन्न होने वाली विभिन्न मौसमी परिघटनाओं का उल्लेख करें। (20)
- (ख) वर्षण की व्याख्या करते हुए वर्षण के विभिन्न रूपों को बतलायें। (20)
- (ग) सागरीय लवणता से आप क्या समझते हैं। सागरीय लवणता को प्रभावित करने वाले कारकों की चर्चा करें। (20)
4. निम्नलिखित में से प्रत्येक का 250 शब्दों में उत्तर दीजिए।
- (क) भारत का सामाजिक-आर्थिक विकास ही जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख नियंत्रक है। स्पष्ट कीजिए। (20)
- (ख) भारत में जनजातियों की समस्याओं एवं भारत सरकार द्वारा उनके विकास हेतु चलाये जा रहे कार्यक्रमों का विश्लेषण कीजिए। (20)
- (ग) भारत से उपयुक्त उदाहरण देकर, ग्रामीण अधिवासों के प्रारूप एवं प्रतिरूप को निर्धारित करने में स्थितिकी एवं अन्य भौतिक कारकों की भूमिका स्पष्ट कीजिये। (20)
- खण्ड - 'ख'
5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का 150 शब्दों में उत्तर दीजिए। 12×5=60
- (क) भारत के विशेष संदर्भ में नगर एवं महानगरीय प्रदेश की उत्पत्ति।
 (ख) भारत में लिंगानुपात कम होने का कारण एवं परिणाम।
 (ग) भारतीय ग्रामीण बस्ती के प्रकार एवं प्रतिरूप पर भौगोलिक कारकों का प्रभाव।
 (घ) भारत में धार्मिक अल्पसंख्यकों की समस्याओं एवं उनके समाधान पर चर्चा कीजिए।
 (ड.) नगरीय स्वप्रसार की संकल्पना भारत के विशेष संदर्भ में।
6. टिप्पणी करें- (प्रत्येक 250 शब्दों में उत्तर दीजिए।)
- (क) संवृद्धि धूव सिद्धान्त (20)
 (ख) प्रदेश की संकल्पना (20)
 (ग) जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त (20)
7. निम्नलिखित में से प्रत्येक का 250 शब्दों में उत्तर दीजिए।

- (क) भारत में नगर नियोजन के तत्वों एवं उपागमों का चंडीगढ़ नगर या राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के योजना के संदर्भ में परीक्षण कीजिए। (20)
- (ख) भारतीय जनसंख्या की समस्यायें एवं जनसंख्या नीति का विश्लेषण कीजिए। (20)
- (ग) नगरीकरण की समस्याओं के समाधान के लिए उपयुक्त नगरीकरण की नीति हेतु आवश्यक तत्वों पर चर्चा कीजिए। (20)
8. निम्नलिखित में से प्रत्येक का 250 शब्दों में उत्तर दीजिए।
- (क) कृषि अवस्थितिकी के वानथ्यूनेन सिद्धान्त का वर्णन करें। (20)
- (ख) बेवर के सिद्धान्त की चर्चा करते हुए इसके व्यवहारिक पहलूओं पर प्रकाश डालें। (20)
- (ग) किस्टोलर का सिद्धान्त पर चर्चा कीजिए। (20)



U.P.S.C.

परिक्षार्थी का नाम: Rajani Singh Date: 4/10/2010
Name of the Candidate:
Roll No.: 015566
विषय Subject: Geography
टॉपिक Topic : feell - 5 Paper
टेस्ट संख्या Test No.: 10
दिनांक Date of Examination: 18/09/10
प्रयुक्त कापियों की संख्या /No. OF COPIES USED:

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर
Signature of the Candidate

निरीक्षक के हस्ताक्षर Signature of the Invigilator

U.P.S.C.

उत्तर-3

(i)

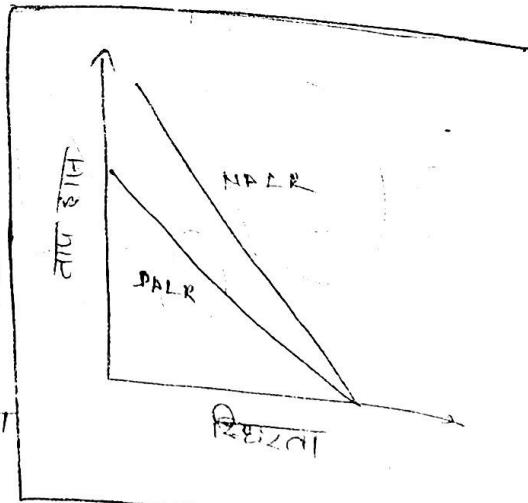
वायुमंडल में तापमात्रा व वाष्प की मात्रा के आधार पर विभिन्न दशाएँ उत्पन्न होती हैं। अस्थायित्व वस्त्र अस्थायित्व की दशाएँ और मंडल में जटिलताएँ जटियों का निपारण करती हैं।

वायुमंडलीय स्थिरता की दशा से तापर्य संतहन चारों की अनुपस्थिति तभा अस्थायित्व मौसमी तंत्र से होती है। वायुमंडलीय स्थिरता की दशा के लिये शुल्क ताप हाल हर (C DALR) के जा सामान्य ताप हाल हर (C NALR) से अधिक होता अवश्यक है। NALR < DALR

इस विधि में शुल्क वायु विस्तरीय वायु की अपेक्षा अतीव छोटी होकर विहर हो जाती है तथा नीचे जी ओर बैठने लगती है,

जब विधि स्थिरता की अवधार में वायुमंडल से जड़ी जाते हैं,

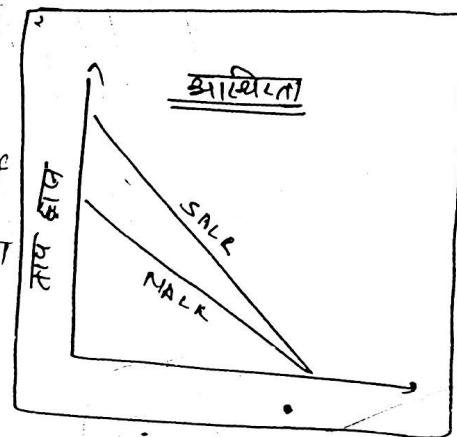
संतहन अपने आदि का अद्भुत होता है। तथा अति-मौसमी दशाएँ अपने जाती हैं।



U.P.S.C.

वायुमंडलीय आविष्टा हेतु अपेक्षाकृत स्थिरता
आविक वाप्त की मात्रा आवश्यक होती है। इस स्थिरता
में शोममंडल में वायु का निर्देश अवधिगमन
होता रहता है तथा अस्थिरता बढ़ी रहती है।

आस्थिरता की दण्ड के लिये आई ताप हास्त
दर को सामान्य ताप हास्त दर
से कम होना चाहिए। इस
स्थिरता में वायु का ताप नियन्त्रणी
वायु की अपेक्षा आविक बनाकर होता
है तथा वह निर्देश अपर
बढ़ती रहती है।



वायुमंडलीय आस्थिरता की स्थिरता में
शोममंडल में उच्च पुथल, वर्षा, मौसूल इत्यादि आदि
पापा जाता है। ये अपेक्षा ही तीव्र वायु, छोटी,
ठोड़ी आदि के उत्पन्न करती हैं।

a) आस्थिरता की दण्ड का विभिन्न प्रकार की

वायुमंडलीय स्थिरता

विभिन्न विभिन्न प्रकार की

प्रश्न संख्या
(Question
No.)

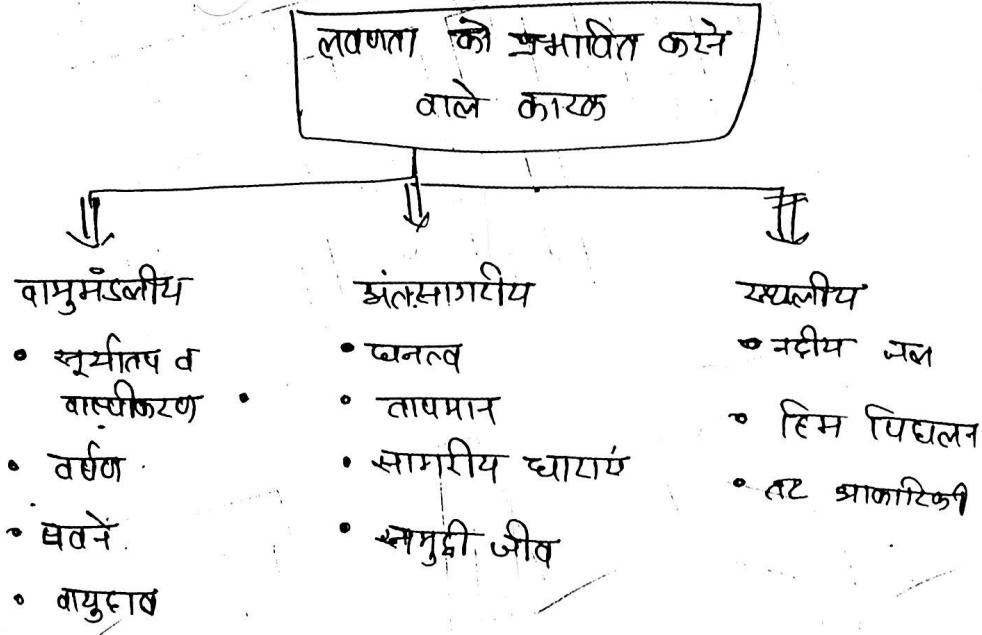
U.P.S.C.

गोपनीय देवदी को अपना कहती है, क्योंकि वह
जेंडर पर अधिक धूमों को लाते हैं तभी कि जीव
प्राणी अपने देवदी की अपनी अपनी अधिक
अधिक धूमों की उपलब्धि को दिखाते हैं तभी कि वह
गोपनीय देवदी को अपना कहती है।

✓

U.P.S.C.

उत्तर (ii)) महासागरीय जल में विद्यमान भौतिक गुणों में लवणता का महत्वपूर्ण पर्याम रखती है जिसका तात्पर्य उन लबणों के कुल मात्र से है, जहाँ ग्राम / 1000 से अधिक करते हैं लवणता का वितरण अनेक धूतसागरीय, वायुमंडलीय व घट्टालीय कारणों से प्रभावित होता है।



लवणता को प्रभावित करने वाले वायुमंडलीय कारणों में सूर्योत्तर वाहत्पूर्णि है, सूर्योत्तर जी शैक्षिकता के कारण वाष्पीकरण अधिक होता है जिससे लवणता में वृद्धि होती है। पवनों जी घरण के हाथ वाष्पीकरण को बढ़ाती है, इसके साथ-साथ

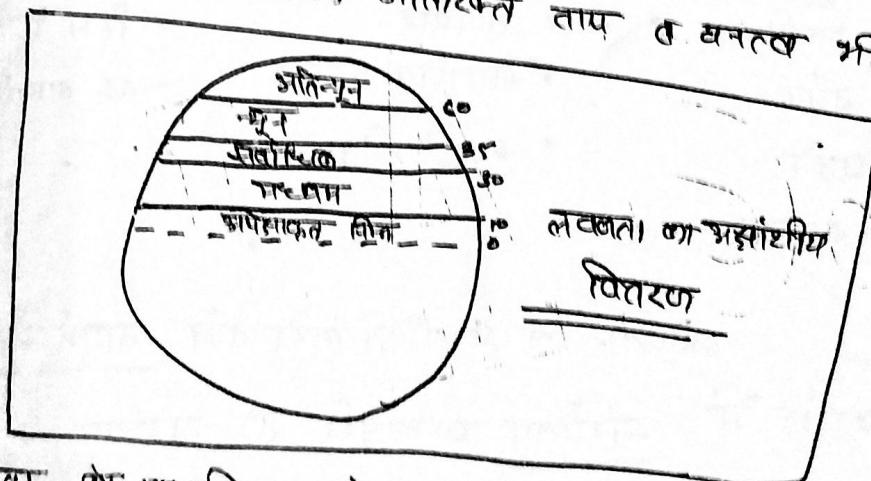
U.P.S.C.

राज्य के कारण बदला प्रभाव जो विभिन्न लोगों के द्विसौंसौं
लवण्यता का होता है, विषयतीय शेज़र में कषी सेक्टर
में लवण्यता का गहरी कारण है,

इस वायुदाह के कारण लवण्यता में वृद्धि होती है
जगन्नाम्बलीय शेज़र में वार्षिक लवण्यता इसी विशेष
पार्श्व जाती है,

आंतरिकमुखी कारणों में समुद्री व्यायाम
रासायनिक हैं। ऐसी अव्यायामी ग्रस्तार्थी भूमि ज़ंडांगों पर
ग़हासागरों के पार्श्वचिनी तटों पर लगा उच्च उष्णांशों पर
इसी तटों पर लवण्यता बढ़ती है, इसार्दल- भैंसिसनों ग़हारी
ज़नारी खाड़ी।

इसके अतिरिक्त ताप व वनत्व भी



लवण्यता का अभावित नहीं है, समुद्री जीव व पादप जैसे
फैला, जारी हाथा लवण्यता का बढ़ते हैं, और व्यारांगों ज़गार-

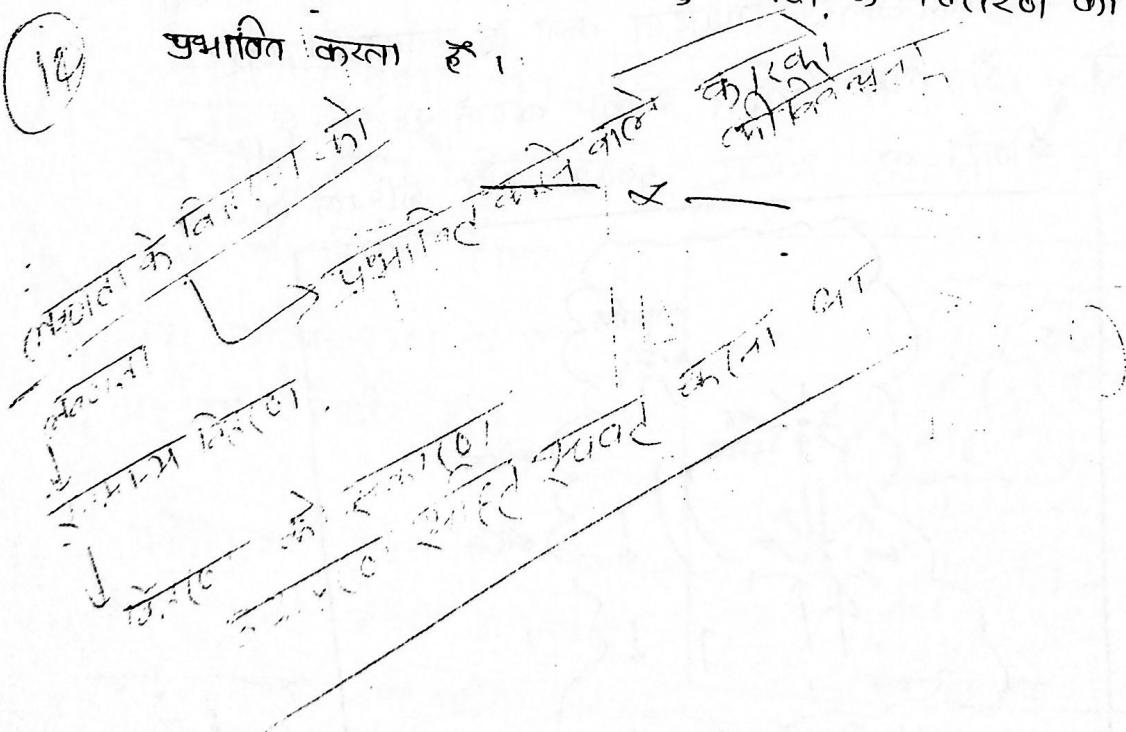
U.P.S.C.

रूपलीय नायकों में हिम पिघलन रुपदी जल मिशन से
रूपलीय जल की प्राप्ति होती है जिससे लवणता कम
होती है। उदाहरण - इसन खाड़ी काला सागर।

~~इसके आध-साध व्यापकों तर की आकारिली
भी लवणता को अभियान करती है। निम्न आसांथों घर
आंधिक बंध या छंट सागरों की लवणता कम होती है
जबकि इन्हीं अंसाठों पर निम्न होती है।~~

लवणता सागर का अल्लखुली अपेक्षित रुप से
मुक्त है जो ताप, व्यवस्था, धीरों के गविरण को
प्रभावित करता है।

(14)

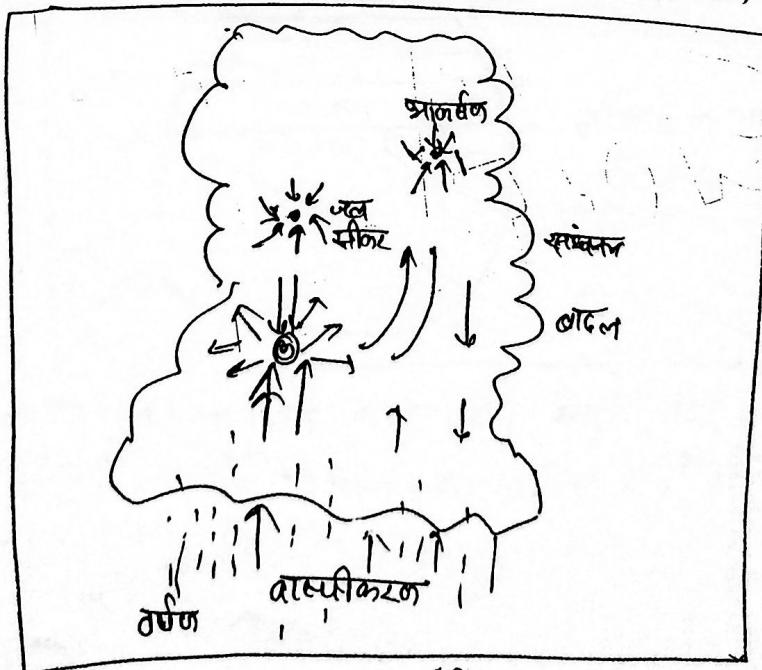


U.P.S.C.

प्रतीक: ३(iii) अफ़ग़ानिस्तान में जलवाय्य की प्राप्ति व नियन्त्रण विकिध मौसमी परिषद्गतिको जो उत्थन करता है। इसी के संबंधित एक प्रक्रिया वर्णन भी है। वर्णन से नियन्त्रण के संबंधित जलवाय्य के संबंधित क्षेत्रों का जल अधिकार दिम के रूप में पृथक् पर गिरना है।

वर्णन जो लियागिधि में वाल्फारेन व सेष्टन चमुख है।

वाल्फारेन क्रिया के हाय ब्राह्मण जलवाय्य और बामुमंडल में उपयित जल सीकरों पर संबंधित होती है। ये जल सीकर आवेदित क्षेत्रों के समान विवर भरते हैं तथा अपना भालू बढ़ाते रहते हैं। जब इन सीकरों का आकार ५०० km से अधिक हो जाता



U.P.S.C.

इस भाग में
कुछ न लिखें
(Don't write
anything in
this part)

तथा गाढ़िल का तापमान औसत से ऊपरी हो जाता है। तो गाढ़िल इन्हें भार वहन से अद्यता है जाते हैं तथा ये जल उपवा द्विम के निम्न में पृष्ठी घर आपतित हो जाते हैं,

रुषिण की

यहाँ में तापमान, संवर्द्धन की गति आदि जलवर्षी विवरणी ओला आदि का पर्यावरण कहते हैं।

- बर्फण मुख्यतः तीन प्रकार का होता है,
- संतरनीय वर्षा
- चर्तीय वर्षा
- चक्काती वर्षा

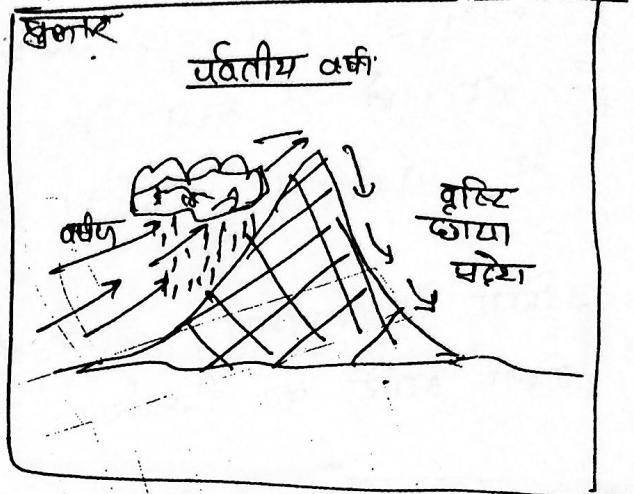
संतरनीय वर्षा उच्च संवर्द्धन के हेतों से होती है विद्युतवर्षा विषुवलीय क्षेत्र। तीव्र संवर्द्धन के बारण कापाली वर्षण में से ज्ञाते होता है तथा गरज-धमाज के ज्ञाते होती है, जब तीव्र वर्षा होती है।



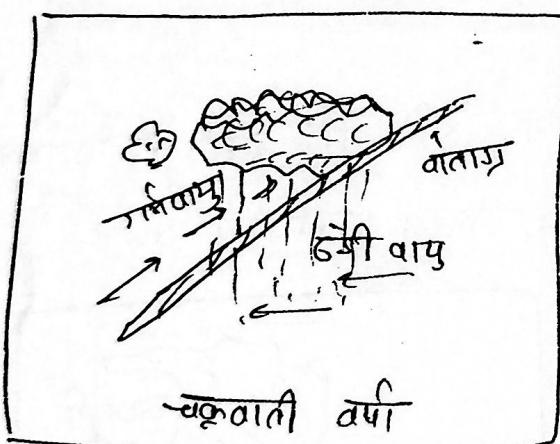
चर्तीय वर्षा वर्तों के द्वारा प्रभावित हालों पर होती है, जब आईता युक्त वायु पर्वतों से उकड़ाकर ऊपर उठती है तो

U.P.S.C.

दूसरे संस्करण खलताप में कर्षी के कारण संवारन तथा वर्षी होती है। इस वर्षी के प्रभावात् वायु छिपक लल पर अतरंति है तो वर्षी का अमाव लोता है इसे वृक्ष वाया प्रदेश कहते हैं।



चूलवाती वर्षी मुख्यतः शीतोष्ण कटिबंधीय देशों में वातानु उत्थानी के कारण होती है। इसमें



दो विपरीत वायुराधिकों के सम्बन्ध वातानु इलाज में न बालों का निर्माण होता है जिससे दीर्घकालिक वर्षी होती है।

वर्षी के विपरीत इनार अलग छला छोड़ों में विपरीत परिविहारियों ने हृदिकरण कोते हैं

U.P.S.C.

- उत्तर (i) प्रोटोटाइप विकास की के 300 लक्ष्य प्राप्ति संबंधि धूव
 (6) नी अवधारणा प्रकृति की गई थी। जिसके अंतर्गत
 आर्थिक लाभ शुल्क देश में आर्थिक क्रियाओं के
 संकेन्द्रण द्वारा लम्बवृद्धि रूप से संस्थापित होने के विकास
 का लक्ष्य रखा गया था।
- संबंधि धूव सिद्धांत की
भूमिका - प्रोटोटाइप विकास में आर्थिक रूप से ही
 स्वतंत्र सण्ठि प्रतीत होती है, विभिन्न दैरों
 में संबंधि धूव के व्यापक प्रोटोटाइप विकास की
 चेतिनि किए। देश में संस्थापनों के संकेन्द्रण के
 अंतिम चरण में अधिक स्पष्ट-प्र० द्वारा विकास का
 विवरण हुआ है।
- परंतु विकासशास्त्रीय दैरों में यह
सिद्धांत विशेषज्ञ अधिकारी, स्पष्ट-प्र० नीचलिया की
बलालता आर्थिक है। उदाहरण स्वदूप सारता में
मी इस छिद्रांग को आधार बनाकर मिलाई,
बर्दीनी आर्दि की खापना की गई 4 परंतु

U.P.S.C.

इस भाग में
कुछ न लिख
(Don't write
anything in
this part)

मुख्यमंडल आर्थिक विकास के लक्षण हासिलगत पही होते हैं ।

संवृद्धि ध्रुव सिहांत के जलव्यवस्था 'आर्थिक विधिमत्ता'

में पूर्ण के भी कठीन असहाय रूपित है । उदाहरण

स्वयंप्रपत्ति देरिय के स्वयंप्रपत्ति ध्रुव

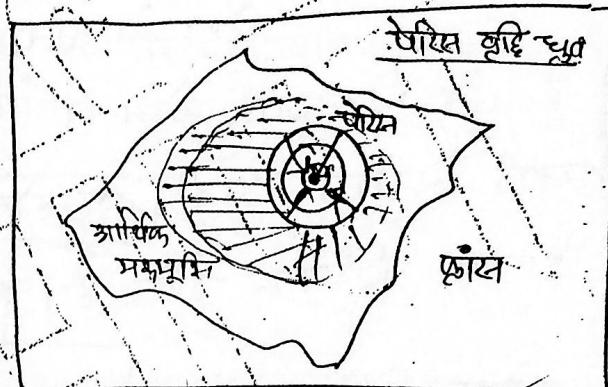
कंचाबों और आर्थिक

प्रकृतिभूमि इंजीनियरिंग के विकास

हो जाया है + समाजनों

के अत्यधिक संजोन्डण विधा

आधों छोटों की लंबाई, जो यह परिणाम है,



मुख्यमंडल ध्रुव सिहांत वर्तुत: आर्थिक

विकास का एक प्राग्राम है जो कोडीनरेशन पर

बल देता है । इसके अर्थात् इसके पालनव्यवस्था

सम्मुचित आर्थिक विकास प्राप्त करना होती है परिस्थितियों

पर निर्भर करता है ।

प्रादेशिक व-

रह सिद्धांत + क्षार्यिक विकास व-

एक चरण के अपने में प्राप्त हो सकता है, सम्युक्त

प्रादेशिक विकास विकास विकास, समावृत्त वितरण

आदि अवधारणाओं को भी समावित करा आवश्यक है ।

— — — X — — —

U.P.S.C.

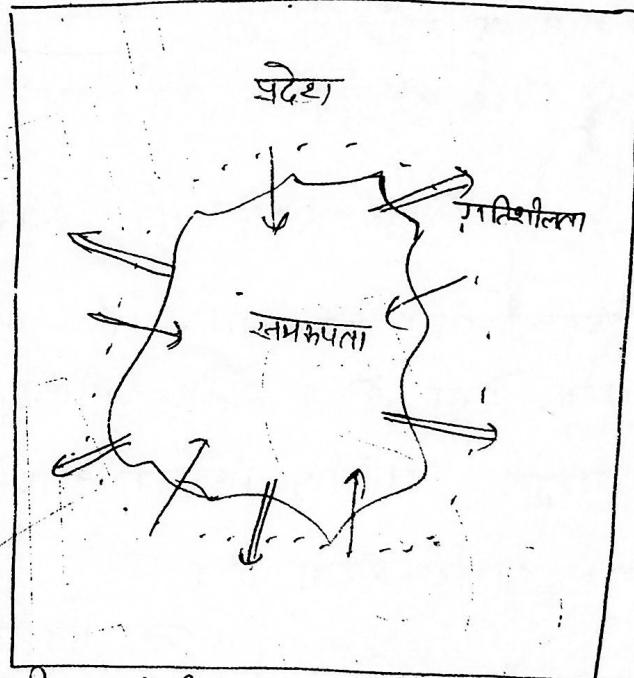
लाइट
कीवी

भौजोलिय अध्ययनों के इस्टिकोण से प्रदेश एक अत्यंत महत्वपूर्ण व मुलभूत इकाई है जिसकी संरक्षणा आ विकास लम्बिक माप से स्ट्रेच, और हेटेन, हार्डशार्न आदि ने किया है।

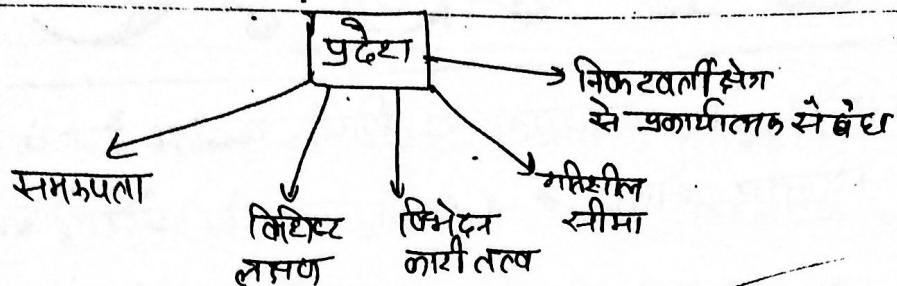
प्रदेश से तात्पर्य “ऐसी समक्षप इकाई से है जो नियन्त्रित होने से मिलता रखता है तथा इसकी सीमा चली तक होती है उहाँ तक पह मिलता रियमन होती है।”

प्रदेश विशिष्ट भौतिक सामग्रिय गुणों से युक्त होता है जिसके लाल इसका विचारन किया जा सकता है। प्रदेश में समक्षपता केन्द्र भी ओर बहती है तथा प्रदेश

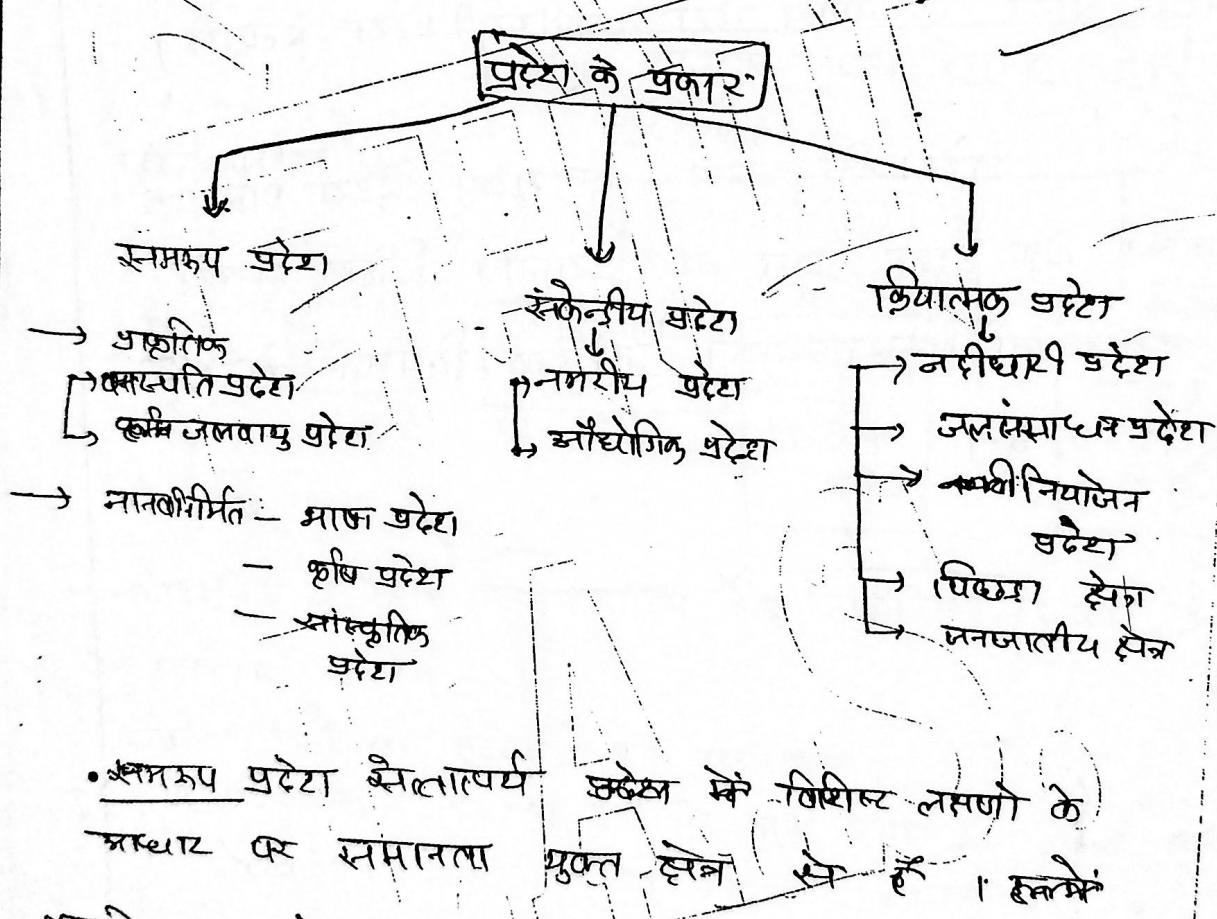
नी सीमाएं संरक्षण लेन के कप में रखे वरिवर्तनमिल होती है। प्रदेश अद्यापि समीपवर्ती क्षेत्र से वृथल होता है वर्त्त गुणात्मक अंतर्ध पाए जाते हैं।



U.P.S.C.



पुरुषों को समरूप लक्षणों स्वं उसी क्रियात्मकता के आधार पर, तीन प्रमुख भागों में बाट छाला है।



प्राणिय लक्षणों^{में} यथा अलवाय, वर्षा, वर्तमानि, उच्चावच्य आदि को शामिल किया जाता है तथा मानवनिर्मित में भाषा, संस्कृति आदि को।

परांक्षाथों का नाम

नं-लेखा
Station No.)

U.P.S.C.

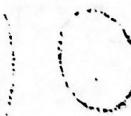
इंडोनेशियन छात्रों में सम्मति का जिसी केंद्रीय एवं देश के व्यापारिक विविध रूपों होता है। यथा। नगरीय छात्रों, आदि

क्रियालय छात्रों से तात्पर्य जिसी विदेश प्रयोजन के लिये निमित्त प्रयोजन के हैं। जैसे निष्पोजन छात्रों पिछ्का प्रयोग, जनजातीय छात्रों, जनजातीय छात्रों इत्यादि।

छात्रों की संस्कृति का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक विज्ञानों का प्राप्त करना तथा व्यानातीय विद्याओं लाभण्यों व संसाधनों का ग्रहणण व्यावोधक विधानों को दृष्टि

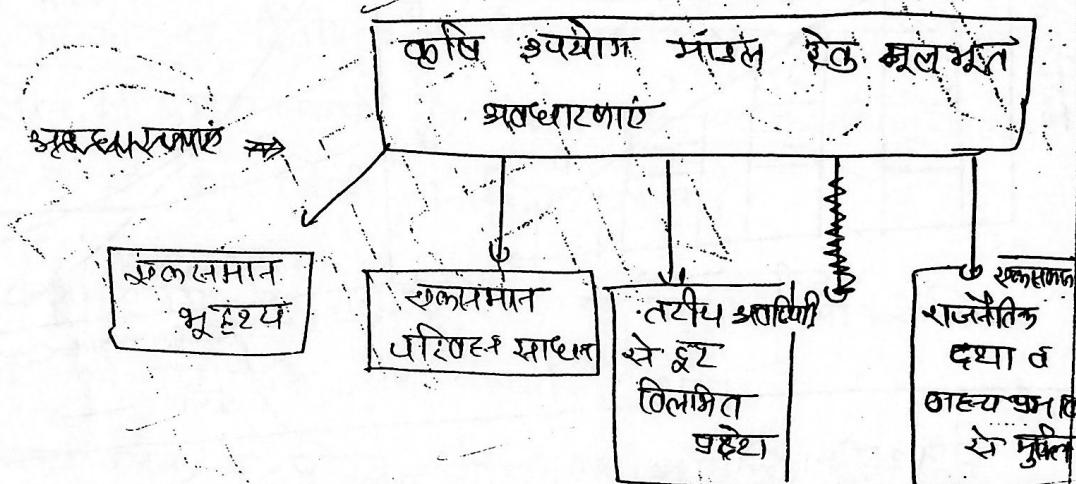
करना है।

X



U.P.S.C.

उत्तर १० कृषि लिंगी समाज की सामाजिक, आर्थिक व्यांकिति अंतरिक्षों का घटिकलन है। वारथ्यूनैन में इसका विश्लेषण एवं उस अधिकृतम लाभ प्राप्ति की के आधार पर कृषि उपयोग भौजल किया गया है। जो उक्त अनुभाविक उत्तरों पर आधारित था।



वारथ्यूनैन द्वारा कृषि उपयोग भौजल के निम्नलिखित ज्ञानक्रमों का आधार बनाया -

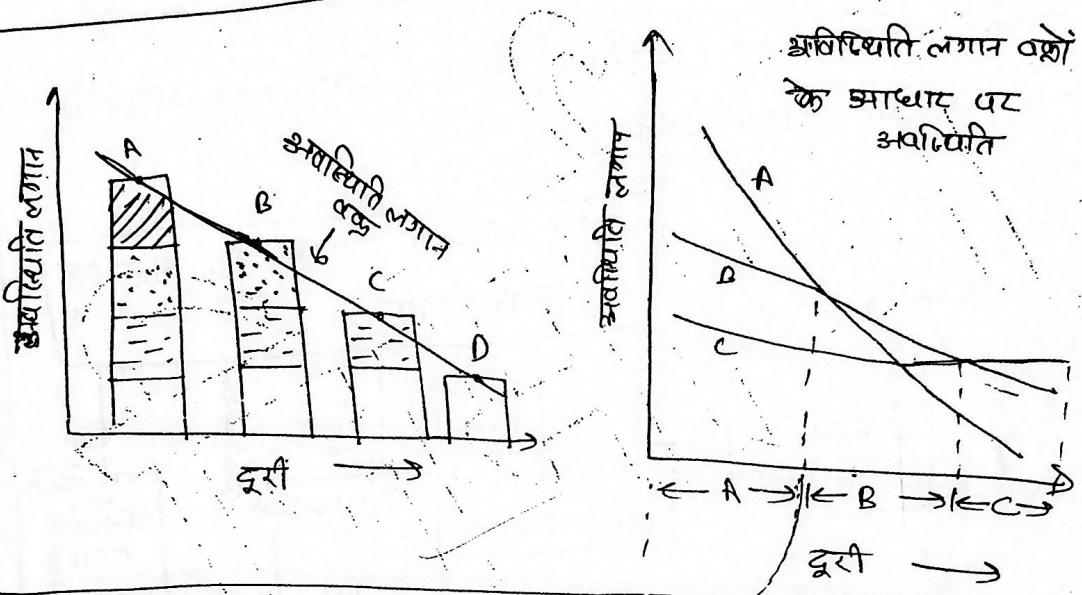
- कृषि उत्पादों का वृल्य व सांग रक्षणात्
- भूमि उत्पादकता अवरता इसी के साप समतः
- कृषि उत्पादों की विविधता अवस्थिति का प्रभावित करती है,

वारथ्यूनैन ने अपनी अवस्थिति लगान सिद्धांत के आधार पर विविध कल्लों के लिए

U.P.S.C.

ज्ञान का निर्धारण किया।

अवस्थिति लगान पर प्रतिक्रिया
मूल्य लाभ है जो एक फसल द्वारा फसल पर ब्राह्म जनती है

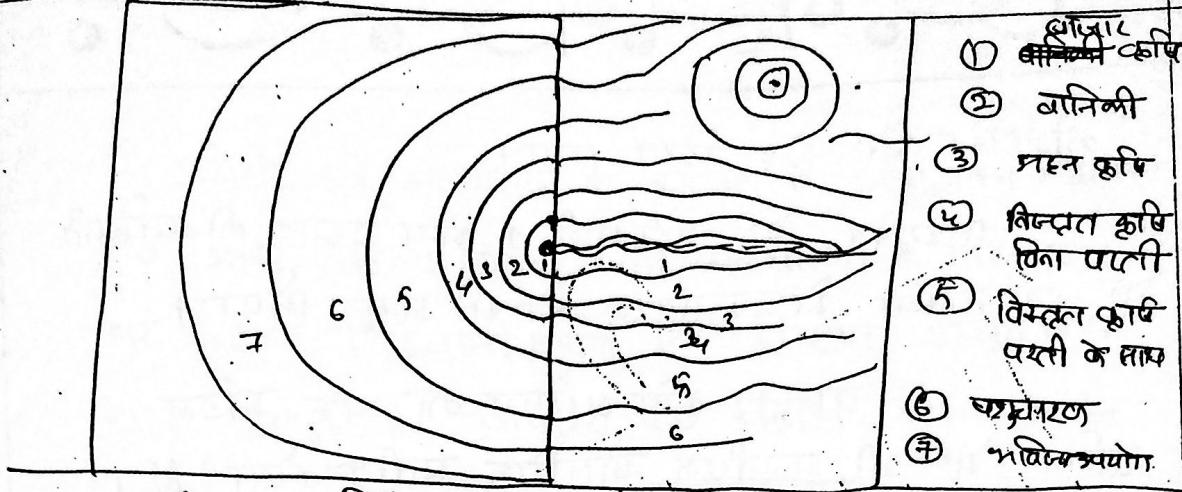


बाजार में $\frac{1}{\alpha}$ अवस्थिति लगान व्यापों को अध्यारोपित
कर न रखने की शर्त जी ऐसे विवरण कृषि
उपयोग पर आधारित थे, तथा खेल बलय में
कीष उत्पाद की इच्छति अधिकातम लाभ को उपलब्धती है,

कृषि बाजार कृषि बलय को एक बलय में लगान
एड़ता। कृषि की भावी, फल, दुर्घट उत्पादों की
कीष विनाशता के लाभ यह निर्धारण किया गया।

U.P.S.C.

इस भाग में
कुछ न लिखें
(Don't write
anything in
this part)



बनियी को द्वितीय तलय में व्यापक दिया गया। तेलालीन ईर्ष्य की आवश्यकताओं को देखते हुए यह आधिक भार के कारण यह निश्चित निश्चित नी गई।

तीसरी तलय में महसून सूखी इलाज माना गया और शाई की महसून सूखी पर आवासित था।

चौथी तलय में खेती सूखी घरती भूमि के बिना गा तलय था। इस भूमि पर शाई धोरे के काल बहुत ज्यादा गया।

पंचम तलय विस्तृत सूखी (जिल्हागीय सूखी) एवं बहुत बहुत ज्यादा गानी जाई। ऐसीमें यह घरती भूमि को बहुत ज्यादा गया।

छठमा तलय विस्तृत पशुवारण हेतु निश्चित किया, तथा इसके बाद अंतिम तलय को भवित्व में उपयोग

U.P.S.C.

जी इसी से छोड़ दिया गया।
वातावरण के नदी मारी व जल बाजार, भी अधिकारी
में इन बलयों में उपांतरण की भी प्रकृति किपा।
वकृत: कृषि अधिकारी का यह मांडल
वर्तमान में भी अत्यधिक यांत्रिकीय स्तरीय होता है।
गान्धी वर्त्य का छोड़ के तो अन्य बलयों की जानी
सीमा तक उपरिक्षित वर्तमान में आत होती है।
कोट्टरण खेड़प युरोप, अंग्रेजीयां के चतुरिक आदि।

वातावरण का कृषि अधिकारी मांडल एक
उत्तरी विद्यार्थी है जो प्रधारि परिवहन कांति के लाल
तथा बुद्धिमत्ता जुतिस्ता के कारण इसमें कुछ विचलन प्राप्त
होता है तथा वर्तमान में भी इसकी उपयोगिता है।

U.P.S.C.

इस भाग में
कुछ न लिखें
(Don't write
anything in
this part)

उत्तर

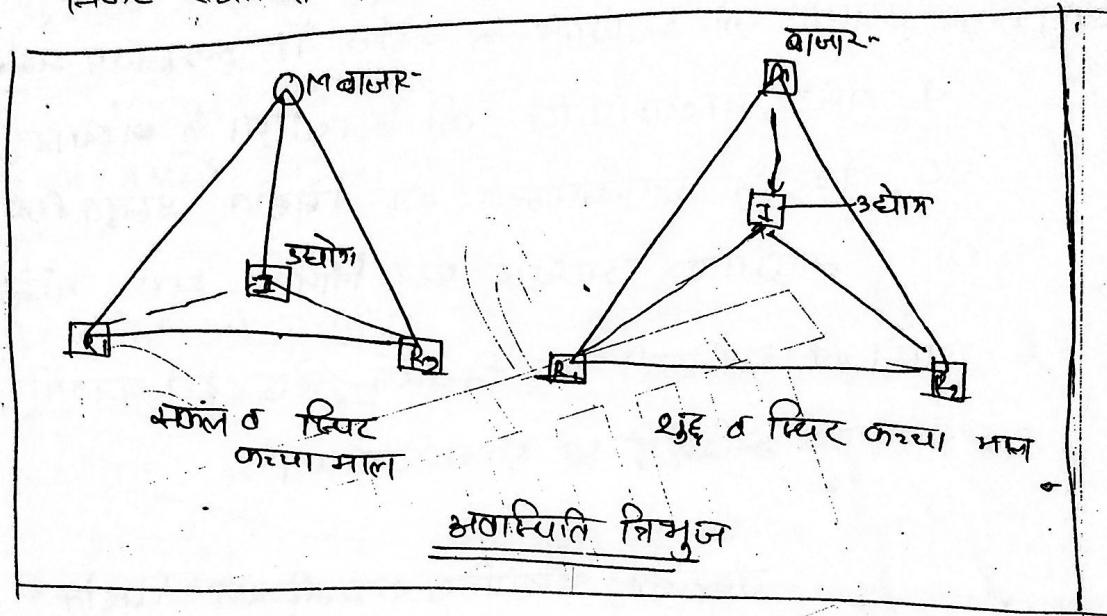
Q(1)

- उद्योगों की अवधिकारी के एवं उपर्युक्त में अनुचलतम् अवधिकारी
- a) अधिकारी लाभ प्राप्ति की अवधारण के आधार पर वेबर ने अन्यान्य लाभ सिद्धांत प्रस्तुत किया था। आनुभाविक आधार पर निर्मित यह मान्यता उद्योगों की अवधिकारी के निर्धारण हेतु द्वारी अनुचलन करणे वाला अभिवृद्धि पर आधारित था

वेबर का औद्योगिक अन्यान्य लाभ सिद्धांत वैज्ञानिक तत्त्वों को शामिल करने के गारण आणी स्थीमा तक डॉक्टरी है। वेबर का कथे माल की के प्रणार के आधार पर उद्योगों उद्योग जीवन निर्धारण का अधिकार वर्तमान में भी वास्तविक है। विशेषकर सफ़र व विद्यर कथे माल पर आधारित उद्योग जैसे लोहा-बस्तात, चीनी उद्योग आदि की अवधिकारी कथा माल शेष के पास ही सर्वाधिक लाभ कारी होती है।

इसी प्रणार विद्यर कथे माल पर आधारित उद्योग जैसे लोहा उद्योग, वेलरी उद्योग आदि आधार सेवा

निकट स्थापित किये जाते हैं।

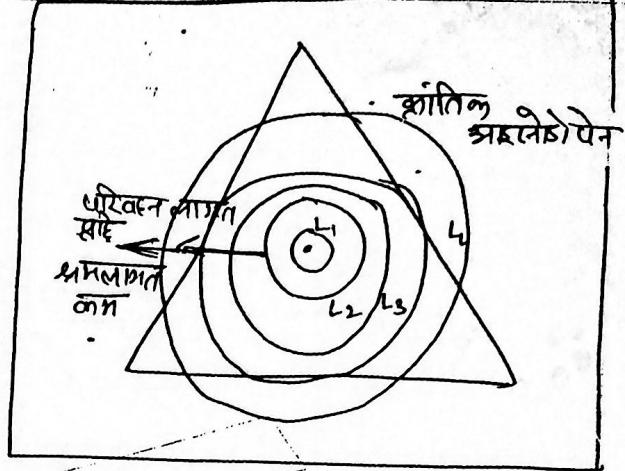


ठेबर के मिहांत जी व्यवहारिका अमेरिका के
दील देश में लोहा-इस्पात उद्योग की अविस्थारित
के रूप में दरवी जा सकती है, जो नोर्फला-र
लोहा उत्पादक देशों के निकट अवस्थित है,
इसी प्रकार भारत में छोटा नामपुर देश
में लोहा-इस्पात उद्योग की अविस्थारित।

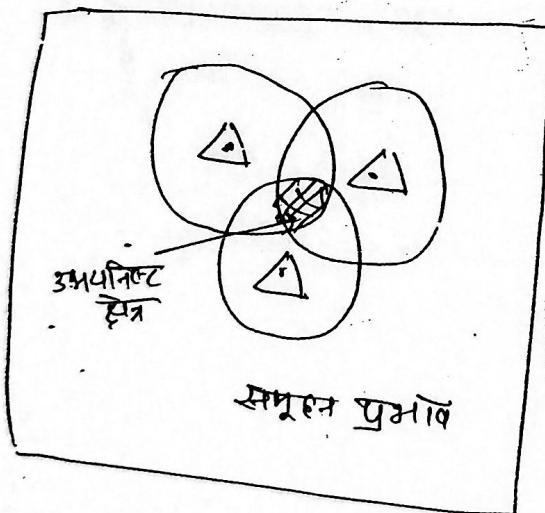
इसी प्रकार देश के मिहांत का
अम लागत स्थिरांत (आइसोडीप्ले) भी व्यवहारिक
है। भारत में अस्ति उद्योग की अविस्थारित इसलाएँ

उपर्युक्त लै। क्षमता में

क्षम की उपलब्धता भी
उपयोग अवास्थिति के
विवरण में सौनादान
होती है।



वेबर के संकेतण प्रभाव की भी उपयोगिता है क्योंकि
देश क्षेत्र में अवश्यकताएँ तत्त्वों जैसे सहकारी
आदि की उपलब्धता अपेक्षित लागत को द्वारा



लापा क्षमिष्टि होती है,
विविध औद्योगिक क्षेत्रों में
अधिकारिक व्योगों का संकेतण
इसी कारण से होता है, तर्तमान
में सजे की अवश्यकता भी इतना
व्यवसायिक उपयोग है।

स्विन्स घटापि औद्योगिक क्षमताकरण में
वेबर की उपयोगिता विविध क्षेत्रों में पाठ
होती है परन्तु परिवर्तन कोंति, वैशिक वाजर
आदि के जरूर बस्ते विविध भी देखने मिलते

२५. वर्तमान में ऐसिया बाजार के लाल ड्योगों
स्थापना बाजार पहुंच पर अधिक निर्भर हो गई
है। विशाखापत्नी में लोहा-इस्ताप ड्योग
की स्थापना इसला इसरों है,

~~पर्याप्त लागत वर्तमान में बहुत निष्ठिक
बत्त्य कही रही गया है। तथा ड्योगों की अवासिति
कई साल स्वेच्छा के सामने एवं तीव्र सेवा में
होना चाहीने अपेक्षित है,~~

इन सब कारणों के
विवरण भी आधिक लाभ की अवधारणा
सर्वाधिक निष्ठिक है, जिसे देश के अभी
सर्वाधिक महत्व दिया है,

•

ड्योगों के व्यानीकरण
हेतु देश का विद्वानों की अद्योगिता कुछ
अपादों को छोड़कर निष्ठी रूप से भावी
जा सकती है,